Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 31

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

6 अक्तूबर 2016 ई 4 मुहर्रम 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

मेरी भविष्यवाणियों के बाद दुनिया में भूकंप और दूसरी आपदाओं का सिलसिला शुरू हो जाना मेरी सच्चाई के लिए एक चिन्ह है। याद रहे कि जब ख़ुदा के किसी रसूल का इंकार किया जाता है चाहे वे इंकार कोई विशेष क़ौम करे या ज़मीन के किसी विशेष भाग में हो मगर ख़ुदा तआला का सम्मान सब पर अज़ाब नाज़िल करता है और आसमान से आमतौर पर बलाएं नाज़िल होती हैं।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

प्रश्न (5) जनाब ने विविध रूप में कई विज्ञापनों में लिखा है कि धर्म की ख़राबी के कारण से दुनिया में अज़ाब नाज़िल नहीं होता बल्कि दुस्साहस और शरारत और रसूलूं के साथ ठट्ठा करने से अज़ाब आता है। अब सैन फ्रांसिस्को आदि में जो भूकंप आए हैं जनाब ने अपनी सत्यता का उन्हें निशान करार दिया है। यह बात समझ में नहीं आती कि यह भूकंप आपके इंकार के कारण से आए हैं।

उत्तर: मैंने कभी नहीं कहा कि ये सभी भूकंप जो सैन फ्रांसिस्को आदि स्थानों में आए हैं यह केवल मेरे इंकार के कारण आए हैं किसी और बात का इसमें दखल नहीं। हां मैं कहता हूँ कि मेरा इंकार इन भूकंपों के प्रकट होने के कारण हुआ है। बात यह है कि ख़ुदा तआला के सभी नबी इस बात पर सहमत हैं कि अल्लाह तआला की आदत हमेशा इस तरह से जारी है कि जब दुनिया प्रत्येक प्रकार के गुनाह करता है और बहुत से गुनाह उन के इकट्ठा हो जाते हैं तब उस ज़माने में ख़ुदा अपनी ओर से किसी को भेजता है और कोई हिस्सा दुनिया का उस का इंकार करता है तब उसका भेजा जाना दूसरे दुष्ट लोगों की सज़ा देने के लिए भी जो पहले अपराधी हो चुके हैं एक कारण हो जाता है और जो व्यक्ति अपने पिछले गुनाहों की सज़ा पाता है उस के लिए इस बात का ज्ञान ज़रूरी नहीं कि उस ज़माने में ख़ुदा की ओर से कोई नबी या रसूल भी मौजूद है जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا

अत: इससे अधिक मेरा अभिप्राय नहीं था कि इन भूकंपों का कारण मेरा इंकार हो सकता है। यही प्राचीन से अल्लाह तआला की आदत है जिस से किसी को इनकार नहीं हो सकता। अत: सैन फ्रांसिस्को आदि स्थानों के रहने वाले जो भूकंप और दूसरी आपदाओं से मारे गए हैं हालांकि मूल कारण उन पर अज़ाब नाज़िल होने के उनके पिछले गुनाह थे मगर यह भूकंप उन्हें मारने वाले मेरी सच्चाई का एक निशान थे क्योंकि प्राचीन से अल्लाह तआला की आदत के अनुसार दुष्ट लोग किसी रसूल के आने के समय मारे जाते हैं और इसी प्रकार मैंने बराहीने अहमदिया और कई अपनी किताबों में यह ख़बर दी थी कि मेरे समय में दुनिया में कई असाधारण भूकंप आएंगे और दूसरी आपदाएं भी आएंगी और एक दुनिया उन से हलाक हो जाएगी। तो इसमें क्या शक है कि मेरी भविष्यवाणियों के बाद दुनिया में भूकंप और दूसरी आपदाओं का सिलसिला शुरू हो जाना मेरी सच्चाई के लिए एक चिन्ह है। याद रहे कि ख़ुदा के रसूल की चाहे किसी ज़मीन के हिस्सा में इंकार हो मगर इस इंकार के समय दूसरे अपराधी भी पकड़े जाते हैं जो और देशों के रहने वाले हैं जिन को रसूल की ख़बर भी नहीं। जैसा कि नूह के समय में हुआ कि एक क़ौम के इंकार से एक दुनिया में आज़ाब आया बल्कि पक्षी तथा जानवर भी इस अज़ाब से बाहर न रहे।

अत: अल्लाह तआला की आदत इसी तरह से जारी है कि जब किसी सच्चे का सीमा से अधिक इंकार किया जाए या उसे सताया जाए तो दुनिया में तरह-तरह की विपत्तियां आती हैं। ख़ुदा तआला की सभी किताबें यही वर्णन करती हैं और कुरआन शरीफ भी यही कहता है जैसा कि हज़रत मूसा के इंकार के कारण मिस्र देश में तरह-तरह की आपदाएं नाज़िल हुईं। जूँ बरसीं, मैंडकें बरसीं, ख़ून बरसा और अकाल पड़ा। हालांकि मिस्र देश के दूर दूर के लोगों को हज़रत मूसा की ख़बर भी न थी और न उनका इसमें कुछ गुनाह था और न केवल ये बल्कि यह सभी मिस्र वासियों के बड़े बच्चे मारे गए और फिरौन एक समय तक इन आपदाओं से सुरक्षित था और जो केवल अनजान थे वे पहले मारे गए और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में जिन लोगों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को सलीब से मारना चाहा था उनका तो बाल बांका भी नहीं हुआ और वह आराम से जीवन बसर करते रहे। लेकिन चालीस साल बाद जब वह सदी गुजरने पर थी तो तैतोस रोमन के हाथ से हज़ारों यहूदी कत्ल किए गए और प्लेग भी पड़ी और कुरआन शरीफ से साबित है कि यह अज़ाब केवल हज़रत ईसा के कारण से था।

ऐसा ही आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में सात वर्ष का अकाल पड़ा और अक्सर अकाल में गरीब ही मारे गए और बड़े सरदार उपद्रव करने वाले जो दु:ख देने वाले थे एक समय तक सज़ा से बचे रहे। इन शब्दों का सार यह कि अल्लाह तआला की आदत इसी तरह से जारी है कि जब कोई ख़ुदा की ओर से आता है और उसका इंकार किया जाता है तो तरह तरह की आफ़तें आसमान से नाज़िल होती हैं जिनमें अक्सर ऐसे लोग पकड़े जाते हैं जिन का उस इंकार से कुछ संबंध नहीं फिर धीरे-धीरे इंकार करने वालों के इमाम पकड़े जाते हैं और सबसे अंत में बड़े दुष्टों का समय आता है, इसी की ओर अल्लाह इस आयत में संकेत फरमाता है

اَنَّا نَاْتِی الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا

अर्थात हम धीरे धीरे ज़मीन की तरफ से आते जाते हैं। इस मेरे बयान में उन कुछ नादानों की आपत्तियों का जवाब आ गया है जो कहते हैं कि निन्दा तो मौलवियों ने की थी और ग़रीब आदमी प्लेग से मारे गए और कांगड़ा और भागसो पहाड़ के सैंकड़ों आदमी भूकंप से मारे गए। उनका क्या दोष था। उन्होंने कौन सा इंकार किया था। अत: याद रहे कि जब ख़ुदा के किसी रसूल का इंकार किया जाता है चाहे वे इंकार कोई विशेष क़ौम करे या ज़मीन के किसी विशेष भाग में हो मगर ख़ुदा तआला का सम्मान सब पर अज़ाब नाज़िल करता है और आसमान से आमतौर पर बलाएं नाज़िल होती हैं और अक्सर ऐसा होता है कि वास्तविक दुष्ट बाद में पकड़े जाते हैं जो मूल फसाद करने वाले होते हैं जैसा कि उन कहरी निशानों से जो हज़रत मूसा ने फिरौन के सामने दिखलाए। फिरौन का कुछ नुकसान नहीं हुआ केवल ग़रीब मारे गए लेकिन अन्त में ख़ुदा ने फिरौन को उसकी सेना के साथ डुबो दिया। यह अल्लाह तआला की सुन्नत है जिससे कोई जानने वाला इनकार नहीं कर सकता।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 164 -167)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

जल्दी सोने और जल्दी उठने के लाभ

आजकल हमारे यहां रात को देर तक जागने और सुबह देर से उठने की आदत लोगों में आम है। हालांकि अगर हम जल्दी सोने और जल्दी उठने की आदत बना लें तो सुनिश्चित करें कि हम न केवल ताज़ा रहेंगे बल्कि हमारे याददाशत में भी वृद्धि होगी। सुबह जल्दी उठने की वजह से सुबह की नमाज़ पढ़ने का भी मौका मिलेगा। इस से रोजमर्रा के कामों में बरकत होगी और यदि आप विद्यार्थी हैं तो आपके पास अपने सबक को दोहराने का भी मौका होगा। याद रखें कि सुबह के समय याद किया हुआ सबक इंसान कभी नहीं भूलता। आधुनिक तहकीकों ने भी इस बात को साबित किया है कि रात को जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठने वाले लोगों के दिमाग़ उन लोगों से बेहतर काम करते हैं। जो देर रात तक जागते हैं और सुबह देर से उठते हैं। इसलिए यदि हम अपनी याददाश्त में सुधार और फ्रेश रहना चहते हैं और सुबह नमाज़ के मामले में अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़री देनी है तो हमें रात को जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठने की आदत अपनानी होगी। अल्लाह हमें सेहत की हिफाज़त के असूलों पर चलने की शक्ति दे। आमीन

यह तो थे जल्द उठने के कुछ फायदे। अब जल्द उठने के तरीकों के बारे में जानें।

* अचानक कोई बड़ा परिवर्तन न करें । यदि आप 8 बजे उठते हैं तो कल सुबह 5 बजे उठने के लिए अलार्म न लगाएं। धीमी शुरुआत करें। कुछ दिनों के लिए समय से 15 मिनट पहले उठने लगें। एक हफ्ते बाद आधे घंटे (15 मिनट बढ़ाकर) पहले उठने लगें। ऐसा ही तब तक करें जब तक आप तय समय तक न पहुँच जायें।

* थोड़ा जल्दी सोने की कोशिश करें। अगर आप को देर रात तक टी वी देखने या इन्टरनेट पर बैठने के कारण देर से सोने की आदत है लेकिन यदि आप सवेरे जल्दी उठने की ठान लें तो यह आदत आपको बदलनी पड़ेगी। अगर आपको जल्द नींद न भी आती हो तो भी समय से कुछ पहले बिस्तर पर लेट जायें। चाहें तो कोई किताब भी पढ़ सकते हैं। अगर आप दिन भर काम करके ख़ुद को थका देते हों तो आपको जल्द ही नींद आ जाएगी।

* अलार्म घड़ी को पलंग से दूर रखें। यदि आप अपनी घड़ी या मोबाइल में अलार्म लगाकर उसे सिरहाने रखते हैं तो सवेरे तय समय पर अलार्म बजने पर आप उसे बंद क़र देते हैं या स्नूज़ कर देते हैं। उसे पलंग से दूर रखने पर आपको उसे बंद करने के लिए उठना ही पड़ेगा। एक बार आप पलंग से उतरे नहीं कि आप अपने पैरों पर होंगे! अब पैरों पर ही बनें रहें और काम में लग जायें।

* अलार्म बंद करते ही बेडरूम से निकल जाएं। अपने दिमाग में बिस्तर पर फिर से जाने का ख्याल न आने दें। कमरे से बाहर निकल जाएं।

* उधेड़बुन में न रहें । यदि आप सोचते रहे कि उठें या न उठें तो आप उठ नहीं पाऐंगे। बिस्तर पर जाने का ख्याल मन में आने ही न दें।

* अच्छा कारण चुनें। सुबह-सुबह करने के लिए कोई ज़रूरी काम चुन लें। इससे आपको जल्दी उठने में मदद मिलेगी।

* जल्दी उठने को अपना इनाम बनाएं। शुरू में यह लग सकता है कि आप जल्दी उठने के चक्कर में ख़ुद को सता रहे हैं। लेकिन यदि आप को इसमें आनंद आने लगा तो आपको यह एक उपहार/पुरस्कार लगने लगेगा।

* बाकी बचे हुए समय का लाभ उठाएं। नमाज़ कुरआन करीम की तिलावत के बाद जो समय बचे तो सुबह की सैर या उम्र के अनुसार कोई कसरत ज़रूर करें। इस से आप का सारा दिन चुस्ती से गुज़रेगा। आप अपने दिन की बेहतरीन शुरूआत करें। और अपना नमूना कायम करें। आप को देख कर आप के घर वाले भी अच्छी आदतों को अपनाऐंगे।

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

प्यारे रसूल(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की प्यारी बातें

माता-पिता की सेवा और रिश्तेदारों से व्यवहार

हज़रत अबू हुरैरह वर्णन करते हैं कि एक व्यक्ति आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और निवेदन किया कि लोगों में से मेरे सम्मान का कौन अधिक योग्य है? आपने फरमाया तेरी माँ। फिर उसने पूछा फिर कौन? आपने फरमाया तेरी माँ। उसने पूछा फिर कौन? आपने फरमाया तेरी माँ। उसने चौथी बार पूछा। फिर कौन? आपने फरमाया। माँ के बाद तेरा पिता तेरे सम्मान के अधिक योग्य है तो स्थिति कहीं करीबी रिश्तेदार।

(बुखारी किताबुल अदब, मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरह वर्णन करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मिट्टी में मिले उसकी नाक! मिट्टी में मिले उसकी नाक (यह शब्द आपने तीन बार दोहराए) अर्थात ऐसा व्यक्ति निंदनीय और दुर्भाग्य पूर्ण है लोगों ने निवेदन किया हुज़ूर! कौन सा व्यक्ति? आपने कहा। वह व्यक्ति जिसने अपने बूढ़े माता-पिता को पाया और फिर उनकी सेवा करके जन्नत में प्रवेश नहीं हो सका।

(मुस्लिम किताबुल बिर्रे)

हज़रत अबू तुफैल वर्णन करते हैं कि मैंने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिराना स्थान में देखा। आप गौशत वितरण फ़रमा रहे थे। इस दौरान एक महिला आई तो हुज़ूर ने उसके लिए अपनी चादर बिचा दी और वह स्त्री उस पर बैठ गई। मैं लोगों से पूछा कि यह महिला कौन है जिस का हुज़ूर इतना सम्मान फरमा रहे हैं? लोगों ने बताया कि यह रज़ाई(माता के अतिरिक्त अन्य दूध पिलाने वाली) माता हैं।

(अबु दाऊद किताबुल अदब)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर वर्णन करते है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया आदमी का सबसे अच्छा धर्म है कि अपने पिता के दोस्तों के साथ अच्छा व्यवहार करे। जबकि उसका पिता मर चुका हो या कहीं और चला गया हो।

(मुस्लिम किताबुल बिर्रे)

हज़रत सईद बिन आस वर्णन करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया बड़े भाई का अधिकार अपने छोटे भाइयों पर इस तरह का है जिस तरह पिता का अधिकार अपने बच्चों पर (यानी बड़ा भाई छोटे भाई के लिए पिता के स्थान पर है इसलिए इसका सम्मान भी वाजिब है)

(मरासील अबी दाऊद पृष्ठ 19)

हज़रत अबू उसैद अस्सादी वर्णन करते हैं कि हम लोग आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित थे कि बनी सलमा का एक व्यक्ति उपस्थित हुआ और पूछने लगा कि या रसूलुल्लाह माता पिता की मृत्यु के बाद कोई ऐसी नेकी है जो मैं उनके लिए कर सकूं? आपने फरमाया। हां क्यों नहीं। तुम उनके लिए दुआ करो, उनके लिए माफी मांगा करो, उन्होंने जो वादे किसी से कर रखे थे उन्हें पूरा करो। उनके प्रिय व संबंधियों से इसी तरह अच्छा सुलूक और अच्छा व्यवहार करो जैसा वह अपने जीवन में उनके साथ किया करते थे और उनके दोस्तों के साथ इज़्ज़त तथा सम्मान के साथ पेश आओ। (अबु दाऊद किताबुल अदब)

हज़रत अनस बिन मालिक वर्णन करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिस व्यक्ति की इच्छा हो कि उसकी उम्र लंबी हो और रिज़क में अधिकता हो तो उसे चाहिए कि अपने माता पिता से उत्तम व्यवहार करे (और अपने प्रिय और संबंधियों के साथ बनाकर रखे) और रिश्तेदारों से अच्छे व्यवहार की आदत डाले।

(मुस्नद अहमद भाग 3, सफ़ा 266)

हज़रत अनस बिन मालिक वर्णन करते हैं कि मैंने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि जो व्यक्ति रिज़्क की वृद्धि चाहता है या इच्छा रखता है कि उसकी आयु और मृत्यु उपरान्त अच्छा वर्णन हो तो उसे रिश्ते दारों से अच्छा व्वयवहार करना चाहिए अर्थात अपने रिश्तेदारों से बनाकर रखनी चाहिए।

(मुस्लिम किताबुल बिर्रे)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला के फज़्ल से आज से तीन दिन के लिए जमाअत अहमदिया जर्मनी को अपना जलसा सालाना आयोजित करने की तौफ़ीक़ मिल रही है और इस जुम्अः के साथ ही सालाना जलसा शुरू हो रहा है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से आज्ञा पाकर इन जलसों का आयोजन शुरू किया था और इसका उद्देश्य जमाअत के लोगों का सुधार था इसका उद्देश्य ख़ुदा तआला की ओर खींचे जाने की कोशिश करना था। ज्ञान और अनुभूति में विकास करना था। पवित्र परिवर्तन पैदा करके उन्हें अपने जीवन का हिस्सा बनाना था। दुनिया की चाहतों और व्यर्थ बातों से अपने आप को बचाना था। इस्लाम और अहमदियत के संदेश को दुनिया में फैलाने की प्रतिज्ञा करना और उसे अपनी सारी क्षमताओं के साथ पूरा करना था। आपस में प्यार, मुहब्बत और भाईचारा के रिश्ते को बढ़ाना था। अतः पहलों ने इस काम को ख़ूब निभाया। कादियान की छोटी सी बस्ती के जलसों में अल्लाह तआला ने इतनी बरकत डाली कि आज इस तरीके पर दुनिया के लगभग सभी देशों में जहां जहां जमाअत स्थापित हैं जलसे आयोजित हो रहे हैं और इन जलसों का भी वही उद्देश्य है जो कादियान के जलसा का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उल्लेख किया था और जिसका मैंने संक्षिप्त रूप से अभी उल्लेख किया है।

परिवेश जैसा भी पवित्र हो इंसान को हर समय शैतान के हमलों से बचने की दुआ करते रहना चाहिए और सतर्क होकर यह ध्यान रखना चाहिए।

अल्लाह तआला ने हज करने वालों को तीन बुराइयों, रफस, फुसूक और जिदाल से बचने की तरफ विशेष ध्यान दिलाया है। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने एक अवसर पर कहा था कि हमारे जलसों में भी अगर इस सोच के साथ लोग आएं जो सिद्धांत अल्लाह तआला ने हज के दौरान बुराइयों से रुकने का वर्णन किया है तो असाधारण सुधार हो सकता है।

हम यह नहीं कहते कि जलसा का स्थान अल्लाह न करे हज का स्थान है लेकिन धार्मिक उन्नति प्राप्त करने के लिए और अपने सुधार के लिए यह आधार है जो अल्लाह तआला ने एक आधार फ़रमा दिया जहां बड़े इकट्ठे हों, भीड़ हों इन बातों का ख्याल रखना और अगर हम धार्मिक विकास के लिए, अपने सुधार के लिए प्रस्तुत होने वाले जलसा में इन बातों का ख्याल रखेंगे तो हमारे सुधार की गुणवत्ता बढ़ेंगी। जलसा एक इबादत तो नहीं लेकिन प्रशिक्षण शिविर ज़रूर है जो रूहानियत में तरक्की के लिए जारी किया गया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा के जो उद्देश्य वर्णन किए हैं वे वास्तव में इन्हीं तीन बातों के आसपास घूमते हैं कि अपने सुधार का अवसर मिले। हमारा अपना आत्म सुधार हो। व्यर्थ बातों से परहेज़ हो। अल्लाह तआला का ध्यान पैदा हो और उसकी आज्ञाओं पर पूर्ण आज्ञाकारिता से चलने की ओर विशेष ध्यान पैदा हो और अपने भाइयों से खास रिश्ता मुहब्बत और भाईचारा स्थापित हो और हर प्रकार के स्वार्थ और झगड़े को खत्म करें।

हम जलसा में आने वालों में इन दिनों में ऐसा शुद्ध परिवर्तन पैदा होना चाहिए कि केवल जलसा के दिनों में नहीं बल्कि बाद में भी हमारी सोहबत में बैठने वाले हमेशा लग़्व से परहेज़ करने वाले हों।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आदेश के हवाले से लग़्व ले बचने,उत्तम चरित्र दिखाने, ज़बान को व्यर्थ बातों से दूर रखने, नमाज़ों में विनय तथा विनम्रता पैदा करने,अंहकार से बचने और प्रत्येक से सहानुभूति करने इत्यादि मामलों के बारे में प्रमुख उपदेश।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 2 सितम्बर 2016 ई. स्थान - काल सरोय जर्मनी

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

अल्लाह तआला के फज़्ल से आज से तीन दिन के लिए जमाअत अहमदिया जर्मनी को अपना जलसा सालाना आयोजित करने की तौफ़ीक़ मिल रही है और इस जुम्अः के साथ ही जलसा सालाना शुरू हो रहा है। जमाअत के लोगों के सुधार के लिए जलसा सालाना के आयोजन की बुनियाद जो अल्लाह तआला के आदेश से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने डाली थी उस पहले जलसा को इस साल 125 साल पूरे होने वाले हैं। वह जलसा जो कादियान की छोटी सी बस्ती में हुआ था और मस्जिद के एक भाग में 75 लोगों ने अपने अन्दर पवित्र परिवर्तन पैदा करने और दुनिया के सुधार और इस्लाम के संदेश को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का सहायक बनते हुए दुनिया में फैलाने का जो वादा क्या था।(उद्धरित आइना कमालाते इस्लाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 5 पृष्ठ 629) उसका परिणाम हम आज देख रहे हैं कि अल्लाह तआला ने उनके काम और उनकी निय्यतों में ऐसी बरकत डाली कि आज यहां जर्मनी में जमाअत अहमदिया यहाँ के बड़े बड़े उपलब्ध हालों और कंपलैकस में से एक पूरे कंपलैकस में जो व्यापक क्षेत्रफल में फैला हुआ है इसमें अपना जलसा आयोजित कर रही है और इस विशाल इमारत के बावजूद कुछ आवश्यकताओं के लिए बाहर खुले मैदान

में मारकियाँ और टेंट लगाए गए हैं। अगर सांसारिक संसाधनों के मामले में हम देखें तो हमारे लिए आज भी संभव नहीं कि इतने व्यापक खर्च कर सकें लेकिन अल्लाह तआला जमाअत के पैसे में बरकत डालता है जिस के कारण अल्लाह तआला हमें यहां जलसा आयोजित करने की तौफ़ीक़ प्रदान कर रहा है।

हाल में आवाज़ गूंज रही थी इसलिए हुज़ूर ने फरमाया: यह echo वापस आती है जलसा गाह का प्रशासन देखे कि अंत तक आवाज़ भी सही जा रही है या नहीं।

जैसा कि मैंने कहा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से आज्ञा पाकर इन जलसों का आयोजन शुरू किया था(उद्धरित आइना कमालाते इस्लाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 5 पृष्ठ 611) और इसका उद्देश्य जमाअत के लोगों का सुधार था। इसका उद्देश्य ख़ुदा तआला की ओर खींचे जाने की कोशिश करना था। ज्ञान और अनुभूति में विकास करना था। पवित्र परिवर्तन पैदा करके उन्हें अपने जीवन का हिस्सा बनाना था। दुनिया की चाहतों और व्यर्थ बातों से अपने आप को बचाना था। इस्लाम और अहमदियत के संदेश को दुनिया में फैलाने की प्रतिज्ञा करना और उसे अपनी सारी क्षमताओं के साथ पूरा करना था। आपस में प्यार, मुहब्बत और भाईचारे के रिश्ते को बढ़ाना था।(उद्धरित शहादतुल कुरआन रूहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 399)

अत: पहलों ने इस काम को ख़ूब निभाया। कादियान की छोटी सी बस्ती के जलसों में अल्लाह तआला ने इतनी बरकत डाली कि आज इस तरीके पर दुनिया के लगभग सभी देशों में जहां जहां जमाअत स्थापित हैं जलसे आयोजित हो रहे हैं और इन जलसों का भी वही उद्देश्य है जो कादियान के जलसा का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उल्लेख किया था और जिसका मैंने संक्षिप्त रूप से अभी उल्लेख किया है।

इसलिए यदि हम इस उद्देश्य के लिए आज यहां जमा हुए हैं तो हम भाग्यशाली हैं कि अल्लाह तआला के फज़लों के वारिस बनेंगे। अगर किसी त्योहार की अवधारणा के साथ आए हैं या हम में से कोई भी आया है तो यह दुर्भाग्य पूर्ण होगा कि अल्लाह तआला ने हमें एक नेक काम के लिए इकट्ठा होने के लिए कहा और हम इकट्ठा भी हुए लेकिन नेक उद्देश्यों को प्राप्त करने के स्थान पर सांसारिक बातों में पड़ जाएं। इसलिए यहां आने वाला हर अहमदी इस बात को ध्यान में रखे कि इन तीन दिनों में दुनिया से पूरी तरह सम्बन्ध विच्छेद कर ले और इस के बाद भी दुनिया में रहने के बावजूद, सांसारिक कामों में पड़ने के बावजूद कि यह भी महत्त्वपूर्ण बात है, सांसारिक काम, रोज़गार है, व्यवसाय है, आवश्यक है लेकिन इसके बावजूद इन नेकियों को जारी रखने की कोशिश करने के लिए वादा करके जाएं ताकि जो यहाँ आप में पैदा हुईं ताकि ख़ुदा तआला के फज़लों को अवशोषित करने वाले बनते रहें। इन दिनों में फर्ज़ और नफिल इबादतों के अतिरिक्त ज़िक्रे इलाही भी करते रहें। ज़िक्र से विचार पवित्र रहते हैं और अल्लाह तआला की ओर ध्यान रहता है और मनुष्य बुराइयों से बचा रहता है। यही इबादत का उद्देश्य है और ज़िक्रे इलाही अनिवार्य इबादतों की ओर भी ध्यान दिलाती रहती है और फिर अगर आदमी वास्तविक इबादत कर रहा है तो इसके कारण से ज़िक्रे इलाही की ओर ध्यान रहता है। इसलिए इस बात को हर एक को याद रखना चाहिए।

अल्लाह तआला ने इस्लाम में इबादत का एक अंग रखा है जो हर हालत में हर मुसलमान पर तो फर्ज़ नहीं लेकिन इसके बावजूद लाखों मुसलमान हर साल इस कर्त्तव्य को अंजाम देते हैं अर्थात हज बैतुल्लाह का फर्ज़। कुछ दिन तक इंशा अल्लाह तआला यह फर्ज़ अंजाम दिया जाएगा। हज की इबादत की तरफ जहां अल्लाह तआला ने ध्यान दिलाकर मुसलमानों को कहा कि अपना सारा ध्यान इन दिनों में अल्लाह तआला की ओर रखो कि इसके बिना हज का उद्देश्य पूरा नहीं होता वहाँ इस ओर भी ध्यान दिलाया कि भीड़ के कारण से एक जगह जमा होने के कारण से कुछ बुराइयां भी पैदा हो जाती हैं। बावजूद इसके कि हज के परिवेश की वजह से प्रत्येक हज करने वाले से यही उम्मीद रखी जाती है कि इस पवित्र परिवेश की वजह से किसी और बात का ख्याल नहीं आ सकता सिवाय ज़िक्रे इलाही के तस्बीह के और तहमीद के, लेकिन अल्लाह तआला जो मानव स्वभाव को जानता है उसने तीन बुराइयों की तरफ भी इस अवसर पर ध्यान दिला दिया कि तुम ने इन चीज़ों से बचकर रहना है। इसलिए परिवेश जैसा भी पवित्र हो इंसान को हर समय शैतान के हमलों से बचने की दुआ करते रहना चाहिए और सतर्क होकर यह ध्यान रखना चाहिए।

अल्लाह तआला ने हज करने वालों को जिन तीन बुराइयों से बचने की ओर ध्यान दिलाया है उनमें से पहला रफस है। काम उत्तेजक बातें तो इसका अनुवाद किया ही जाता है लेकिन इसका अर्थ बुरी बातें करना ,गालियां देना, गंदी और बेहूदा बातें करना, गन्दे किस्से सुनाना, व्यर्थ और बेकार बातें करना, गप्पें आदि मारना, बैठ कर मज्लिसें जमाना ये सब इसमें शामिल हैं। अत: यहाँ स्पष्ट रूप से सभी प्रकार की व्यर्थ लग़्व और गप्पें लगाने मज्लिसें लगाने से मना किया। कोई यह न समझे कि हज पर जाकर ये बातें कौन करता होगा वहाँ तो पवित्र होकर प्रत्येक जो भी हज पर जाता है उससे यही उम्मीद रखी जाती है कि अपना सब कुछ अल्लाह तआला पर क़ुरबान कर रहा होता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो फरमाते हैं कि मैं जब हज पर गया तो एक युवा मेरे साथ परिक्रमा कर रहा था तो तवाफ़ करते हुए बजाय दुआओं और ज़िक्र के वह फिल्मी गाने गा रहा था। भारत से गया हुआ था। तो मैंने उससे कहा कि यह तुम क्या कर रहे हो। तो कहने लगा मुझे तो दुआएं इत्यादि आती कोई नहीं जो हज पर की जाती हैं। हम व्यापारी आदमी हैं। कलकत्ता में कपड़े की बड़ी दुकान है। हमारे मुकाबला पर एक और बड़ी कपड़े की दुकान है बड़े कारोबारी लोग हैं। उन मालिकों में से एक हज करके आया उसने अपने दुकान के बोर्ड पर हाजी भी अपने नाम के साथ लिख लिया है। लोगों की इस तरफ इसलिए अधिक ध्यान हो गया कि हाजी साहिब की दुकान है अच्छा माल देते होंगे। तो मेरे पिता ने मुझे कहा कि मैं तो हज पर जा नहीं सकता बीमारी या बुढ़ापे की वजह(जो भी कारण हो) तुम हज पर जाना ताकि हम भी अपना बोर्ड लगा लें। तो मेरा तो यह उद्देश्य है कि व्यापार को बढ़ाने के इरादे से हज कर रहा हूँ। अत: जब हज पर इस उद्देश्य के लिए लोग जा सकते हैं तो फिर किसी और इबादत या जलसा पर क्या सोच नहीं हो सकती।

फिर अल्लाह तआला ने फरमाया कि हज के दिनों में फसोक नहीं करना अर्थात आज्ञा पालन और अनुपालन से बाहर नहीं निकलना। अल्लाह तआला की आज्ञाओं को मानना है। जो नेकी का रास्ता तुम ने अपनाया है उसे अपनाए रखना है और बुराई से नहीं झुकना।

फिर अल्लाह तआला फरमाता है कि हज के दिनों में जिदाल यानी हर प्रकार के झगड़े तथा लड़ाई से पूरी तरह से बचना है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद ने एक अवसर पर फरमाया था कि हमारे जलसों में भी अगर इस सोच के साथ लोग आएं जो नियम अल्लाह तआला ने हज के दौरान बुराइयों से रुकने का वर्णन किया है तो असाधारण सुधार हो सकता है।

(ख़ुत्बाते महमूद भाग 23 पृष्ठ 566-567)

निश्चित रूप से आप ने सुधार के लिए यह बड़ी सैद्धांतिक बात बयान फ़रमा दी। हम यह नहीं कहते कि जलसा का स्थान अल्लाह न करे हज का स्थान है या अब जैसे कुछ ग़ैर अहमदियों ने हम पर आरोप लगाना शुरू कर दिया है कि कादियान हम जाते हैं इसलिए हज का स्थान देते हैं, यह ग़लत है लेकिन धार्मिक उन्नति प्राप्त करने के लिए और अपने सुधार के लिए यह आधार है जो अल्लाह तआला ने एक बुनियाद फ़रमा दी, जहां भीड़ इकट्ठी हों इन बातों का ख्याल रखना और अगर हम धार्मिक विकास के लिए अपन् सुधार के लिए जमा होने वाले जलसा में इन बातों का ख्याल रखेंगे तो हमारे सुधार की गुणवत्ता बढ़ेंगी। जलसा एक इबादत तो नहीं लेकिन प्रशिक्षण शिविर ज़रूर है जो रूहानियत में तरक्की के लिए जारी किया गया है। इस में हम अगर बुरी बातें करने, गालियां देने गंदी और बेहूदा बातें करने किस्से सुनाने के काम करेंगे तो लक्ष्य नहीं पूरा हो सकता। तो इसमें हमें इन सब बातों से बचना है। अगर हम लग़्व बातों से बचेंगे और लग़्व बातचीत से बचेंगे तो निश्चित रूप से एक शांत और शांतिपूर्ण और नेकियाँ बिखेरने वाला माहौल पैदा होगा और जलसा का उद्देश्य पूरा होगा। फिर फिसूक जो अल्लाह तआला की आज्ञाकारिता से बाहर निकलने का गुनाह है इससे बचना है। यह महत्त्वपूर्ण बात है कि हम पूर्ण रूप में जब धार्मिक उद्देश्य के लिए आए हैं अल्लाह तआला की आज्ञाकारिता का बोझ अपनी गर्दन पर हमेशा डाले रखें।

अत: सारांश यह कि हम ने कुरआन की शिक्षा को अपने ऊपर लागू करते हुए अल्लाह तआला की इबादत का हक भी देना है और बाकी आदेश का पालन भी करना है।

फिर एक अत्यंत कर्म जो संबंधों को तोड़ने का माध्यम बन जाता है और फिर यह संबंध वर्षों टूटे रहते हैं झगड़े चलते रहते हैं उनसे बचने का आदेश दिया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा के जो उद्देश्य वर्णन किए हैं वे वास्तव में इन्हीं तीन बातों के आसपास घूमते हैं कि अपने सुधार का अवसर मिले। हमारा अपना आत्म सुधार हो। व्यर्थ बातों से परहेज़ हो। अल्लाह तआला का ध्यान पैदा हो और उसकी आज्ञाओं पर पूर्ण आज्ञाकारिता से चलने की ओर विशेष ध्यान पैदा हो और अपने भाइयों से खास रिश्ता मुहब्बत और भाईचारा स्थापित हो और हर प्रकार के स्वार्थ और झगड़े को खत्म करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब एक साल देखा कि लोग आपस में एक दूसरे के हक़ अदा करने के लिए ध्यान नहीं दे रहे और स्वार्थ कुछ लोगों पर ग़ालिब आ गया है और कुछ छोटी-छोटी बातों पर बहस और झगड़े के मामले बने हैं तो आप ने नाराज़गी व्यक्त फरमाते हुए एक साल जलसा ही आयोजित नहीं किया था।

(उद्धरित शहादतुल कुरआन रूहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 394)

इसलिए जलसा में शामिल होने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह याद रखना चाहिए कि उस ने जहां इन दिनों में हर छोटी से छोटी बात में अपने आत्म सुधार की ओर ध्यान देना है अपना समय इधर उधर बर्बाद करने के स्थान पर जलसा में शामिल होने के उद्देश्य को पूरा करते हुए जलसा के सभी कार्यक्रम सुनने हैं। प्रत्येक तकरीर करने वाले की तकरीर में सुधार और नेकी की बातें मिल जाती हैं। यह कोई नहीं कह सकता कि हमें कुछ नहीं मिला या हम बहुत बड़े ज्ञानी हैं। जितना बड़ा अच्छा ज्ञानी हो कोई न कोई बात मिल जाती है या कम से कम दुहराई हो जाती है। इसलिए उन्हें ध्यान से सुनना चाहिए। अपनी आध्यात्मिकता को बढ़ाने के लिए अल्लाह तआला की इबादत का हक अदा करें और फिर बन्दों का हक अदा करने की ओर भी ध्यान देना चाहिए। यहाँ झगड़े और लड़ाई का तो प्रश्न ही नहीं होता। इस जलसा से वास्तविक फ़ैज़ पाने के लिए झगड़े और लड़ाई का सवाल नहीं कि झगड़ा होता है या नहीं होता जलसा के वास्तविक फ़ैज़ पाने के लिए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं का वारिस बनने के लिए जिन के पुराने झगड़े चल रहे हैं वह यहां आ कर झगड़े करें बल्कि उन्हें भी एक दूसरे से आगे बढ़कर सुलह करके उन्हें समाप्त करना चाहिए। अपने अंहकार समाप्त करें। मुझे पता है कि हर साल जलसा में कुछ पुराने परिवारों में कुछ लागों में कुछ पुरानी बातों के कारण से लोगों में मन मुटाव पैदा हो जाते हैं और कुछ लोग आपस में लड़ भी पड़ते हैं। जलसा में तो हर एक यहाँ आया होता है दो नाराज़ समूहों या लोगों का आमना-सामना हो जाता है। यहाँ तो हर अहमदी ने आना है। इसलिए यह नहीं हम कह सकते कि वह क्यों जलसा में आया और वह क्यों नहीं आया। नाराज़ लोगों में महिलाओं में भी और पुरुषों में भी जब इस तरह उनकी पुरानी नाराज़गियाँ चल रही हों तो जब एक दूसरे को देखते हैं तियोरियां चढ़नी शुरू हो जाती हैं। माथे पर बल पड़ने शुरू हो जाते हैं। फिर कई बार लोग दूर से ही या चलते चलते कोई न कोई व्यंग्य वाक्यांश कह जाते हैं और भाव यह होता है कि जिस तरह हम ने उन्हें नहीं कहा बल्कि वैसे ही बात कही हालांकि वास्तव में वह तंग करने के लिए या जानबूझकर कहा जाता है और दूसरा पक्ष पहले से ही दिल में पैच ताब खा रहा होता है वह भी ग़ुस्सा में कुछ कह देता है। मानो एक लग़्व हरकत से फिर अल्लाह तआला की आज्ञाकारिता से बाहर निकलते हैं और फिर लड़ाई तक कई बार नौबत आ जाती है। अगर किसी को अपनी भावनाओं पर नियंत्रण नहीं है तो बेहतर है कि जलसा के माहौल से पहले ही ख़ुद ही बाहर चले जाएं। जलसा में शामिल न हों। दो चार लोग ही ऐसे होते हैं जो जमाअत की बदनामी का कारण बनते हैं और जलसा में आकर जलसा की बरकतों से भाग लेने के स्थान पर अल्लाह तआला की नाराजगी पाने वाले बन जाते हैं। क्या कभी अल्लाह तआला पसंद करेगा कि एक नेक काम के लिए जमा होने वाले मोमिन अपने आध्यात्मिक विकास और अच्छे उद्देश्यों को प्राप्त करने के स्थान पर बुराईयों को बढ़ाने वाले हों।

अल्लाह तआला ने जब सफलता प्राप्त करने वालों के बारे में फरमाया तो विनम्र नमाज़ों के बाद व्यर्थ बातों से परहेज़ करने वालों का उल्लेख फरमाया। अल्लाह तआला फरमाता है कि

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ وَ الَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ

(अल्मोमेनून :2-4)वास्तव में सफल हो गए वे मोमिन जो अपनी नमाज़ों में विनम्रता करते हैं और लग़्व से बचने वाले हैं।

इसलिए यहां एक नेक उद्देश्य के लिए आए हैं। नमाज़ों में भी लगभग सभी शामिल होते हैं लेकिन अल्लाह तआला फरमाता है कि विनम्र नमाज़ें पढ़ो। अल्लाह तआला के पूर्ण आज्ञाकारी बनते हुए नमाज़ें पढ़ो।

जमाअत के साथ नमाज़ों का एक उद्देश्य यह भी है कि जहां एक एकता पैदा हो एक शरीर बनकर अल्लाह तआला के सम्मुख हूँ और इसी तरह एक दूसरे की आध्यात्मिकता और धर्म भी एक दूसरे में जाए और अवशोषित हो। इसलिए जो विनम्र नमाज़ें पढ़ रहे होंगे पवित्र होकर अल्लाह तआला के आगे झुक रहे होंगे उनका प्रभाव कम स्तर वालों पर भी होगा जो साथ खड़े होंगे लेकिन प्रभाव वही होगा जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमा दिया कि अल्लाह तआला का पूर्ण पालन करते हुए ये नमाज़ें पढ़ी जा रही होंगी, विनम्रता होगी तब ये बातें होंगी। कई बार लोग मुझे लिखते भी हैं कि जलसा के दिनों में विनम्रता और विनय की नमाज़ों का उन्हें बहुत मज़ा मिलता है तो इस सुख को प्राप्त करने के लिए हर एक को कोशिश करनी चाहिए ताकि उन मोमिनों में शामिल होने वाले बन जाएँ जो कल्याण करने वाले हैं जो सफल हैं लेकिन अल्लाह तआला ने कल्याण पाने वालों और सफल होने वालों के लिए विभिन्न माध्यम बताए हैं कि उनके माध्यमों को अपनाने से वास्तविक और पूर्ण सफलता मिलती है।

जो आयतें मैंने पढ़ी हैं उन से पता चलता है कि दूसरा माध्यम अल्लाह तआला ने लग़्व से दूरी का फरमाया है। इसलिए इस ओर भी हर अहमदी को जलसा के दिनों में भी और बाद में भी विशेष ध्यान देना चाहिए। हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल ने "अल्लग़ाव" की व्याख्या करते हुए फरमाया कि इसमें सभी बातें आ जाती हैं अर्थात हर प्रकार का झूठ, हर प्रकार का गुनाह, ताश जूआ गप्पें मारना आरोप निकालना ये सब बातें इसमें शामिल हैं।

ताश जूआ का उदाहरण आपने दिया है इस से मुझे whatsapp पर भेजी एक तस्वीर याद आ गई। कुछ लोगों पर तो नेक माहौल और अच्छा और पवित्र स्थानों का भी कोई प्रभाव नहीं होता। एक हज पर जाने वाले का तो मैंने उल्लेख किया है उसकी मिसाल दी है, जिस तस्वीर का में उल्लेख कर रहा हूँ वह मस्जिद में ऐतकाफ बैठने वालों की तस्वीर थी जिसमें ऐसे लोग भी थे। कुछ लोग पवित्र कुरआन या कुछ किताबें पढ़ रहे होंगे या हदीस आदि जो भी पढ़ रहे थे लेकिन कुछ ऐसे भी थे जो मस्जिद में बैठे हुए हैं मस्जिद का परिवेश साफ नज़र आ रहा है और वहाँ ताश खेल रहे थे। लिखने वाले ने उस पर अपना comment यह भी लिखा है कि ये लोग मस्जिद नबवी में बैठे हैं। तो यह हालत है कुछ लोगों की कि इबादतों में भी लग़्व से रुकते नहीं लेकिन फिर भी ये लोग पक्के मुसलमान हैं और अहमदी काफ़िर। ये लोग तो अल्लाह तआला से भी व्यवहारिक मज़ाक कर रहे हैं उनसे बढ़कर कौन क्रूर हो सकता है। अत: ये नमूने जो हम दूसरों को देखते हैं तो हमें उनसे सबक लेना चाहिए कि कभी हमारे अंदर ऐसी बातें पैदा न हों और साथ ही हमें अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना चाहिए कि उस ने हमें तौफीक़ दे दी कि हम ने ज़माने के इमाम को स्वीकार किया है जिन्होंने हमें बार बार इन लग़्व से बचने की ओर ध्यान दिलाया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह लग़्व के बारे में वर्णन करते हुए फरमाते हैं कि "रिहाई प्राप्त मोमिन वे लोग हैं जो लोग लग़्व कार्यों और लग़्व बातों और लग़्व हरकतों लग़्व जलसों और लग़्व सोहबतों और लग़्व संबंधों और लग़्व जोशों से दूर हो जाते हैं।"

(जमीमा बराहीन अहमदिय भाग 5 रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 21 पृष्ठ 198)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सभी लग़्वों को चिन्हित कर दिया है। अब जितनी बातों का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उल्लेख किया है यह सब एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। एक लग़्व काम दूसरे लग़्व काम

की तरफ लेकर जाता है और यदि विचार करें तो लग़्व काम लग़्व बातें और लग़्व हरकतें जिन से घटित होती हैं वे लग़्व मज्लिसों में बैठने वाले होते हैं। लग़्व लोगों की सोहबत और मेल मिलाप से, संबंध से लग़्व प्रकार के जोशों से पैदा होती हैं। थोड़ी थोड़ी सी बात पर जोश में आ जाना और ग़ुस्से में आ जाना उनसे ही पैदा होती हैं। अब ऐतकाफ में बैठ कर ताश खेलने वालों का मैंने उदाहरण दिया है कहने को तो मस्जिद में बैठे हैं ऐतकाफ में बैठे हैं लेकिन इबादत के लक्ष्य को पूरा करने की स्थान पर लग़्व कर रहे हैं। अब उनके साथ बैठने वाले भी वैसे ही लोग होंगे जैसे ये हैं। ऐसे लोगों की संगति भी ख़राब करती है चाहे वह मस्जिद में बैठे हैं लेकिन हम जलसा में आने वालों में इन दिनों में ऐसा पवित्र परिवर्तन पैदा होना चाहिए कि केवल जलसा के दिनों में नहीं बल्कि बाद में भी हमारी सोहबत में बैठने वाले हमेशा लग़्व से परहेज़ करने वाले हों। ऐसी मज्लिसें हों जिनके साथ बैठने वाले कभी रद्द नहीं किए जाते। अल्लाह तआला के यहाँ मक्बूल होने वाले लोग होते हैं। हमारे आचरण उच्च हों। हमारी सच्चाई की गुणवत्ता उच्च हों। जो दूसरों को भी हमारे व्यावहारिक नमूनों को देखकर अच्छा परिवर्तन पैदा करने वाला बना दे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह पर हमें नसीहत करते हुए फरमाते हैं कि "एक और बात भी महत्त्वपूर्ण है जो कि हमारी जमाअत को धारण करनी चाहिए और वह यह है कि ज़बान को व्यर्थ बातों से पवित्र रखा जाए।" फरमाया "ज़बान अस्तित्व की दहलीज़ है और ज़बान को पवित्र करने से मानो ख़ुदा तआला अस्तित्व की दहलीज़ में आ जाता है। जब ख़ुदा तआला दहलीज़ में आ गया तो अंदर आना क्या आश्चर्य है।"

(मल्फूज़ात भाग 3 जिल्द 245-246 प्रकाशन 1985 ई संस्करण यू. के)

दहलीज़ क्या है।? दहलीज़ कहते हैं किसी घर के मुख्य दरवाज़ा को मेन गेट को। जब ख़ुद तआला आप के घर के निकट आ गया, दरवाज़ा पर आ गया तो आप कहते हैं कि उस का अंदर आना कोई दूर की बात नहीं। कोई आश्चर्य नहीं कर सकता कि वह अंदर नहीं आएगा। इसलिए अल्लाह तआला लग़्व से बचने वालों और उत्तम चरित्र दिखाने वालों नरम ज़बान का उपयोग करने वालों के क़रीब हो जाता है और इतने क़रीब हो जाता है कि अगर नेकियों में नियमित रहे तो ख़ुदा तआला फिर ऐसे लोगों पर अपना फज़ल फरमाते हुए उन्हें अपना बना लेता है। अल्लाह तआला का घर में आना यही है कि उस बन्दे को अपना बना ले और जब अल्लाह तआला अपना बना लेता है तो इबादत में बढ़ने और नेकियों में बढ़ने की आदमी को ताकत मिलती चली जाती है। अत: नेकियों से नेकियाँ पैदा होती हैं और अल्लाह तआला की नज़दीकी के रास्ते खुलते चले जाते हैं।

जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूं कि हम यहाँ अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए अपने अंदर शुद्ध परिवर्तन पैदा करने के लिए आए हैं। जब यह उद्देश्य है तो केवल भाषण सुनकर ज्ञान का आन्नद उठाने से यह लक्ष्य हासिल नहीं हो सकता। जब तक हम अपने अंदर व्यावहारिक परिवर्तन पैदा न करें और व्यावहारिक परिवर्तन के लिए जहां इबादत करते हुए अल्लाह तआला का हक देना है वहाँ उच्च नैतिकता और लग़्व से बचकर एक दूसरे का हक देना है। इसलिए उसकी ओर विशेष रूप से ध्यान देने की ज़रूरत है।

यह अल्लाह तआला की कृपा है कि उसने हमारी भूलों को छिपाया हुआ है और हमारी ग़लतियां उभर कर दूसरों के सामने नहीं आतीं वरना अगर हम में से हर एक अपनी समीक्षा करे तो हमें पता लगे कि कितनी ग़लतियाँ हैं और हम में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानकों के अनुसार कितनी कमज़ोरियां पाई जाती हैं और कमज़ोरियां जमाअत और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नाम को बदनाम करने का कारण बन सकती हैं इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत को नसीहत देते हुए यह भी फरमाया है कि हमारी ओर सम्बंधित होकर हमें बदनाम मत करो।

(मल्फूज़ात भाग 1 जिल्द 146 प्रकाशन 1985 ई संस्करण यू. के)

अगर हमारी इबादतों की गुणवत्ता अच्छी नहीं तो हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बदनाम करने का साधन बन रहे होंगे। अगर हमारे चरित्र अच्छे नहीं तो हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बदनाम करने का माध्यम बन रहे होंगे। अगर हम लग़्व में गिरफ्तार हैं हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बदनाम करने का साधन बन रहे होंगे। इसलिए एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है हम अहमदियों पर और हमें अपनी समीक्षा करते रहने की ज़रूरत है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर नसीहत करते हुए फरमाया कि "जो व्यक्ति ईमान को कायम रखना चाहता है वह अच्छे कर्म में तरक्की करे।" फरमाया कि "यह आध्यात्मिक मामले हैं और कार्यों का प्रभाव आस्थाओं पर पड़ता है।"

(मल्फूज़ात भाग 6 जिल्द 366 प्रकाशन 1985 ई संस्करण यू. के)

अत: केवल यह कहना कि मैं आस्था के मामले में बहुत दृढ़ता अहमदी हूँ पर्याप्त नहीं है अगर अच्छे कर्म नहीं हैं उच्च नैतिकता अगर नहीं हैं क्योंकि धीरे धीरे अच्छे कर्म में कमज़ोरियां आस्था में कमज़ोरी का भी कारण बन जाती हैं

फिर नमाज़ की ओर ध्यान दिलाते हुए आप फरमाते हैं कि "नमाज़ विनय तथा विनम्रता से अदा करो और दुआएं बहुत करो।"

इसलिए इन दिनों में और हमेशा अपनी नमाज़ में विनय तथा विनम्रता पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए ताकि ख़ुदा तआला से हमारा संबंध मज़बूत हो और इन जलसों में शामिल होने का वास्तविक उद्देश्य तो यही है कि हम रूहानी तरक्की करें।

आपस में अच्छे संबंध और एक दूसरे की भावनाओं का ख्याल रखने की ओर ध्यान दिलाते हुए आपने फ़रमाया कि "जैसे रिफक नम्रता और नर्मी से अपनी औलाद से मामला करते हो ऐसे ही आपस में भाइयों से करो।" फरमाया "जिस के चरित्र अच्छे नहीं हैं मुझे इस के ईमान का ख़तरा है क्योंकि यह अंहकार की एक जड़ है।"

(मल्फूज़ात भाग 6 जिल्द 369 प्रकाशन 1985 ई संस्करण यू. के)

आप फरमाते हैं कि "अंहकार करने वाला दूसरे का वस्तुत: हमदर्द नहीं हो सकता। अपनी सहानुभूति को सिर्फ मुसलमानों तक ही सीमित न रखें बल्कि प्रत्येक के साथ करो।" चाहे वह मुसलमान है या ग़ैर मुस्लिम प्रत्येक के साथ सहानुभूति करो।" फरमाया "ख़ुदा सब का रब्ब है।" केवल मुसलमानों का ख़ुदा नहीं है ख़ुदा तो प्रत्येक का रब्ब है चाहे वह कोई हो। किसी भी धर्म से संबंध रखने वाला हो। फिर कहते हैं कि "हां मुसलमानों की विशेषता: सहानुभूति करो।" मानवता के नाते प्रत्येक से सहानुभूति करनी चाहिए और मुसलमानों की विशेष रूप से करो। "और फिर मुत्तक़ी और सालेहीन की इस से विशेष।

(मल्फूज़ात भाग 6 जिल्द 371 प्रकाशन 1985 ई संस्करण यू. के)

और जो लोग मुत्तकी हूँ सालेहीन में शुमार होते हैं उनके साथ तो अधिक संबंध बढ़ जाता है तो और बढ़ना चाहिए।

इसलिए ये वे उपदेश हैं जो हमें अपने अंदर आध्यात्मिक परिवर्तन पैदा करने वाला बना सकते हैं एक दूसरे के लिए सहानुभूति की भावना हमारे अंदर होंगे अंहकार को हम दिल से निकालने वाले होंगे। अपनी संतान की तरह एक दूसरे से नरमी और लचीलापन और प्यार से बात करने वाले होंगे। अगर यह बातें होंगी तो इन सभी झगड़ों और दंगों से बचने वाले होंगे जो हमें कभी-कभी परीक्षा में डाल जाते हैं और जैसा कि मैंने कहा यहाँ जलसा में भी ऐसे प्रकट हो जाते हैं और फिर मैं कहूंगा कि हमारे यहां जमा होना अपनी आध्यात्मिक और व्यावहारिक स्थिति को विकसित करना है और यह लक्ष्य हम उस समय पूरा कर सकते हैं कि एक कोशिश से अल्लाह तआला और उसके बन्दों के अधिकार को अदा करने के लिए ध्यान देने वाले हों। इसलिए इन दिनों में बहुत ध्यान से इस बात का ध्यान रखें। अल्लाह तआला प्रत्येक को इसकी तौफीक़ प्रदान करे। जलसा के प्रशासन के साथ भी भरपूर सहयोग करें। हालात की वजह से अगर कई बार प्रवेश द्वार पर चेकिंग आदि में समय लग जाए तो वहां भी सहन करें। साहस और धैर्य से काम लें और असंख्य ये जो काम करने वाले स्त्री पुरष कार्यकर्ता, पुरूष और महिलाएं हैं बच्चे बच्चियां हैं उनसे भरपूर सहयोग करें। यह न देखें कि कौन किस उम्र का है यह देखें कि जो उसके ज़िम्मे काम दिया गया वह उसे अंजाम देने के लिए आप को कोई बात कह रहा है जिस पर आप ने पालन करना है। उनके लिए दुआएं भी बहुत करें कि अल्लाह तआला उन्हें सही रंग में काम करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। अल्लाह तआला करे कि हम जलसा से वास्तविक फ़ैज़ पाने वाले हों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं के वारिस बनें।

☆ ☆ ☆

☆ ☆

आखिर तुम किस बुनियाद पर गवाही दे रहे हो

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बद्दू से घोड़ा खरीदा और जल्दी से चलने को कहा ताकि घर पहुंच कर इसकी कीमत अदा कर दें। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जल्दी जल्दी आगे बढ़ गए जबकि बद्दू पीछे रह गया। रास्ते में लोग बद्दू के पास आते और उसके घोड़े की कीमत लगाते, उन्हें पता नहीं था कि प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह घोड़ा ख़रीदा है। एक आदमी घोड़े की क़ीमत रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की लगाई हुई क़ीमत से अधिक लगाई, तो बद्दू ने ज़ोर से चिल्लाकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आवाज़ दी और कहा:

"आप को यह घोड़ा खरीदना है तो ख़रीद लें वर्ना मैं इसे दूसरे के हाथ बेच दूँगा।"

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

"क्या मैंने तुझ से यह घोड़ा खरीद नहीं लिया है ?"

बद्दू ने कहा: नहीं नहीं अभी खरीदना और बेचना तय नहीं हुआ।

फिर बद्दू और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बीच बहस होने लगी। यह देखकर लोग उनके पास इकट्ठे हो गए। बद्दू कहने लगा:"

आप इस बात पर कोई गवाह पेश करें कि वास्तव में मैंने आप को अपना घोड़ा बेच दिया है।"

जो मुसलमान भी उनकी बातचीत सुनकर वहां आता वह बद्दू से कहता तेरा बुरा हो! क्यों ज़िद करता है और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ बहस कर रहा है, क्या आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सच के ख़िलाफ भी कोई बात करेंगे?

इसी दौरान हज़रत ख़ज़ीमा पुत्र साबित रज़ि अल्लाह तआला वहां आ गए, जहां वह बद्दू बार बार एक ही बात की रट लगाये बैठा था कि अगर कोई गवाह है तो पेश करो वरना मुझे घोड़ा नहीं बेचना। जब हज़रत ख़ज़ीमा रज़ि अल्लाह तआला ने रसूले अकरम (स) और बद्दु के बीच बहस, और बद्दू का यह कथन सुना कि "आप इस बात पर कोई गवाही पेश करें कि वास्तव में मैंने आप को अपना घोड़ा बेच दिया है?" तो वह कहने लगे

"मैं गवाही देता हूँ कि निश्चय ही तूने अपना घोड़ा प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथों में बेच दिया है!"

यह सुनना था कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत ख़ज़ीमा की ओर ध्यान दिया और पूछा:

"आख़िर तुम किस आधार पर गवाही दे रहे हो (जबकि घोड़ा खरीदने और बेचने के समय तुम हमारे पास मौजूद न थे)?"

हज़रत ख़ज़ीमा रज़ि अल्लाह ने कहा:

" हे अल्लाह के रसूल! जब आप हमें आसमान की ख़बरें सुनाते हैं तो मैं उनकी पुष्टि करता हूँ, (कि सच कहा आपने) तो क्या मैं आपके इस कथन की पुष्टि नहीं करूंगा?

उनके कहने का मतलब था कि आसमानों का ख़ुदा जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास अपने विशेष प्रतिनिधि हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम के माध्यम से कोई वह्यी भेजता है, तो हम (सहाबा) स्वीकार कर लेते हैं और आप की पुष्टि करके पूरी बात मानते हैं तो फिर क्या कारण है कि खरीदने और बेचने में, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बात की पुष्टि न करूँ ?!

जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने प्यारे साथी का यह जवाब सुना तो फरमाया, "हे ख़ज़ीमा तेरी गवाही आज से दो गवाहों के बराबर है और उन्हें "ज़ुश्शहादतैन"(दो गवाहियों वाला) का उपनाम दिया।

(अबू दाऊद शरीफ, हदीस 3607, अहमद बिन हंबल: जिल्द नम्बर 5 हदीस 215)

(हज़रत खज़ीमाह बिन साबित रज़ि अल्लाह तआला का संबंध कबीला ओस से था। वह बदर और अन्य युद्धों में सम्मलित हुए रहे। फतह मक्का के समय ओस कबीला का झंडा हज़रत ख़ज़ीमा रज़ि अल्लाह के हाथ में था।)

☆ ☆ ☆

हजरत उमर रज़ि की घटना

रात का समय था। सारा मदीना शहर सोया पड़ा था।

उसी समय हजरत उमर शहर से बाहर निकले। तीन मील जाने के बाद एक औरत दिखाई दी। वह कुछ पका रही थी। पास ही दो तीन बच्चे रो रहे थे।

हजरत उमर ने उस औरत से पूछा,"ये बच्चे क्यों रो रहे है?"

औरत ने जबाब दिया, "भूखे हैं। कई दिन से खाना नहीं मिला। आज भी कुछ नहीं है। खाली हांडी में पानी डाल कर पका रही हूं।

हजरत उमर ने पूछा, "ऐसा क्यों कर रही हो?"

औरत ने जवाब दिया, "बच्चों का मन बहलाने के लिए।"

हजरत उमर तड़प उठे। उसी समय वापस लौटे।

खजाने से घी, आटा और खजूरें ली। नौकर से बोले, "इन्हें मेरी पीठ पर बांध दो।"नौकर ने कहा, "यह आप क्या कर रहे हैं? मैं ले चलता हूं।" हजरत उमर ने जबाब दिया, "कयामत में मेरा बोझ तुम नहीं उठाओगे।" सब चीजें चह खुद लाद कर ले चले। उसी औरत के पास पहुंचे। उसने ये चीजें देखी तो बहुत खुश हुई।

जल्दी जल्दी आटा गूंथा।हांडीं चढ़ाई। हजरत उमर चूल्हा फूंकने लगे। खाना तैयार हुआ। बच्चों ने पेट भर कर खाया। खाकर उछलने कूदने लगे। हजरत उमर देखते थे, खूब खुश होते थे।

मां भी बहुत खुश थी। बार- बार दुआएं दे रही थी। कहती थी,

"खलीफा तुमको होना चाहिए। उमर इस काबिल नहीं है।"

बेचारी गरीब मां! उसे कौन बताता कि वह

किस से बातें कर रही है।

☆ ☆ ☆

एक आश्चर्य जनक सार्वभौमिक हिसाब

हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस की मुबारक ज़बान से अंग्रेज़ विद्वान को आश्चर्य में डालने वाला अजीब हिसाब :.

" मेरा तो यह अनुमान है अगले 115,110 वर्ष के अंदर पूरी दुनिया इस्लाम में दाख़िल कर जाएगी और दलील यह देता रहा हूं कि क़रीब 90 साल पहले एक आदमी ने जो अकेला था उसने यह एलान क्या था कि ख़ुदा तआला ने मुझे इसलिए खड़ा किया है कि सारी दुनिया में धर्म को प्रधानता दूं। यह एक ऐसी आवाज़ थी जिसे कोई सुनने वाला नहीं था ख़ुद उसके घर वाले उस के सम्मान को नहीं पहचानते थे। लोग उसके विरोध में खड़े हो गए बल्कि They got united against him सारी दुनिया एकत्रित होकर मुकाबले में खड़ी हो गई। हर धर्म के लोगों ने इसका विरोध किया। लेकिन इस विरोध के बावजूद वह जो अकेला था। अल्लाह तआला ने उस पर ऐसा फज़ल किया कि नब्बे (90) वर्ष में वह एक से एक करोड़ हो गया। अब अगर अगले सौ साल में इस करोड़ में से प्रत्येक एक करोड़ बन जाए तो गुणा लगा कर देख लो क्या शक्ल बनती है। इसलिए फ्रैंकफर्ट में भी जब मैंने यही जवाब दिया तो एक बड़ा अच्छा शरीफ और मंझे हुआ भरोसे मंद पत्रकार मेरे पास ही बैठा हुआ था। मैंने उससे कहा ज़रा गुणा देकर देखें क्या शक्ल बनती है। पहले तो उसने समझा कि वैसे बातें करते हुए वाक्य बोल गए हैं। तो मैंने उससे कहा मैं तुम्हें यह कह रहा हूँ कि कृपया कर कि मेरी खातिर तकलीफ सहें और दस लाख को दस लाख से साथ गुणा दें। तो इस सज्जन ने जब गुणा दी तो वह समझा कि ग़लती हो गई है। फिर उस को काटा मैं उसे देख रहा था। तब वह फिर गुणा दी तो भी वही शक्ल सामने आई। तब वह मुस्कुराया। उसने गर्दन उठाई और मुझे कहने लगा इतनी तो दुनिया की आबादी नहीं हो सकती। मैंने उससे कहा मैं यह नहीं कह रहा कि इतने हो जाएंगे मैं कह रहा हूँ कि जब पिछले 90 साल में एक से एक करोड़ हो गया तो यह बात असंभव नहीं है कि अगले सौ साल में दुनिया की अधिकतर इस्लाम में दाख़िल कर जाएगी। "

(सबीलुर्ररशीद, भाग 2 पृष्ठ 361)

हज़रत मसीह मौऊद ने बहुत अधिक गुमनामी के ज़माने में जबकि इस्लाम पर पतझड़ थी। अपनी रात की दुआओं से अपनी सज्दा गाह में रोए और ख़ुदा से ख़बर पाकर 1907 ई में यह ख़ुशखबरी सुनाई।

दोस्तों इस यार ने दीं की मुसीबत देख ली
आएंगे इस बाग़ के जल्द लहराने के दिन
दीं की नुसरत के लिए इक आसमां पर शोर है
अब गया वक्त ख़िज़ा आए हैं फल लाने के दिन

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 1 Thursday 6 October 2016 Issue No.31

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

एक अच्छा मुहावरा

हज़रत मीर मुहम्मद इस्हाक़ साहिब

अरबी भाषा के वर्ण माला में वर्ण ह और हे दो अलग-अलग वर्ण हैं । परन्तु इनका उच्चारण हिन्द वालों तथा विशेष करके पंजाब वालों की ज़ुबान पर बराबर होता है। इस लिए लिखते समय लोग पूछा करते हैं कि कोन सी है अभिप्राय है। उत्तर में कहा जाता है कि बड़ी या छोटी हैदराबादी या लाहोरी ।

यह दोनों मुहावरे अच्छे हैं परन्तु मेरा परामर्श है कि अहमदी भविष्य में एक तीसरा मुहावरा प्रयोग में लाए और बहुत अधिक प्रयोग में लांए । जो यह है कि पूछने वाले को बताया जाए कि मसीह वाली हे या महदी वाली हे । जैसे कोई आदमी यह पूछे कि हौसले में कौन सी हे है तो उससे कहो की मसीह वाली । और इसी तरह अगर सवाल हो की हिम्मत किस हे से है तो कहो कि महदी वाली । सारांक्ष यह की बड़ी या छोटी हैदराबादी या लाहोरी कि मसीह या महदी के शब्दों को उदाहरण बना लो । इस से उद्देश भी पूरा हो जाएगा और उम्मते मुहम्मदिया में इन शब्दों का महत्तव तथा प्रसिद् भी हो जाएगी ।और दिन रात बच्चों को विचार रहेगा कि यह शब्द भी वास्तविक आगमन की ओर सूचना दे रहे हैं । आशा है कि दोस्त इस का ध्यान रखेंगे कि मुहावरे प्रयोग से ही प्रचलित होते हैं ।

(अलफज़ल कादियान 31 अगस्त 1933 ई)

शेख़ सादी (रहमहुल्लाह) के अनमोल विचार

इंसान मुस्तक़बिल को सोच के अपना हाल ज़ाया करता है, फिर मुस्तक़बिल मैं अपना माज़ी याद कर के रोता है।
मुस्तकबिल = भविष्य, माज़ी = भूतकाल, हाल = वर्तमान

****

इंसान दौलत कमाने के लिए अपनी सेहत खो देता है और फिर सेहत को वापिस पाने के लिए अपनी दौलत खो देता है।
जीता ऐसे है जैसे कभी मरना ही नहीं है, और मर जाता ऐसे है जैसे कभी जीया ही नहीं।

****

ताज्जुब की बात है अल्लाह अपनी इतनी सारी मख्लूक़ में से मुझे नहीं भूलता और मेरा तो एक ही अल्लाह है में उसे भूल जाता हूँ।

****

आसमान पर निगाह ज़रूर रखो मगर ये मत भूलो के पैर ज़मीन पर ही रखें जातें हैं।

****

अगर तुम अल्लाह की इबादत नहीं कर सकते तो गुनाह करना भी छोड़ दो।

****

दिन की रौशनी में रिज़्क़ तलाश करो, रात को उसे तलाश करो जो तुम्हें रिज़्क़ देता है।

****

बुरी सोहबत के दोस्तों से कांटे अच्छे हैं जो सिर्फ एक बार ज़ख्म देते हैं।

****

जो दुख दे उसे छोड़ दो, मगर जिसे छोड़ दो उसे दु:ख ना दो।

****

मेरे पास वक़्त नहीं है उन लोगों से नफरत करने का, जो मुझसे नफरत करते हैं, क्यों की, में मसरूफ रहता हूँ उन लोगों में जो मुझ से मोहब्बत करतें हैं।

****

जब मुझे पता चला की मखमल के बिस्तर और ज़मीन पर सोने वालों के ख्वाब एक जैसे और क़बर भी एक जैसी होती है तो मुझे अल्लाह के इंसाफ पर यकीन आ गया।

****

खाक से बने इंसान में अगर खाक्सारी (विनम्रता) ना हो तो उसका होना, ना होना बराबर है।

****

122 वां
जलसा सालाना क़ादियान
(जलसा सालाना के आरम्भ पर 125 वां साल)
दिनांक 26, 27, 28 दिसम्बर 2016 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 122 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 26, 27 और 28 दिसम्बर 2016 ई.(सोमवार, मंगलवार व बुधवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

माली के रूप में सेवा के इच्छुक ध्यान दें ।

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान के विभाग तज़ययुन के माली के पद पर नौकरी के लिए आवेदन चाहिए। जो दोस्त सदर अंजुमन अहमदिया में बतौर वित्तीय (स्थिति चतुर्थ) के ग्रेड में सेवा की इच्छा रखते हों वह निम्नलिखित शर्तों के अनुसार निवेदन दे सकते हैं।

(1) उम्मीदवार के लिए शिक्षा की कोई शर्त नहीं है।

(2) उम्मीदवार की आयु 25 वर्ष से कम होनी चाहिए। बर्थ सर्टिफिकेट देना आवश्यक होगा।(3) वही उम्मीदवार सेवा के लिए उपयुक्त होगा, जो केंद्रीय समिति भर्ती कार्यकर्ताओं के इन्ट्रवियू में सफल होंगे।

(4) वही उम्मीदवार सेवा के लिए लिया जाएगा जो नूर अस्पताल कादियान के मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ और तंदुरुस्त होंगे।

(5) उम्मीदवार का कादियान आने जाने का सफर खर्च अपना होगा।

(6) यदि किसी उम्मीदवार का चयन होता है तभी उसे कादियान में अपने आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।

(7) प्रस्तावित आवेदन फार्म नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया से लिए जा सकते हैं। इस घोषणा के दो महीने के अंदर जो आवेदन आएंगे उस पर विचार होगा।

(नाज़िर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क कर सकते हैं:

कार्यालय: 01872-501130 मोबाइल: 09815433760

e.mail: nazaratdiwanqdn@gmail.com

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad